न=नहीं; **अहम्**=मैं; **प्रकाशः**=प्रकट होता; **सर्वस्य**=सबके आगे; **योगमाया**=अन्तरंगा शक्ति से; **समावृतः**=छिपा हुआ; **मूढः**=मूर्ख; **अयम्**=यह; **न**=नहीं; **अभिजानाति**=जान सकता; **लोकः**=मनुष्य; **माम्**=मुझ; **अजम्**=अजन्मा; **अव्ययम्**=अविनाशी अच्युत को।

अनुवाद

मैं मूढ़ और अल्पज्ञ मनुष्यों के सामने कभी प्रकट नहीं होता; उनके लिए अपनी नित्य योगमाया में छिपा रहता हूँ। इस प्रकार मोहित हुआ यह जगत् मुझ अजन्मा अविनाशी अच्युत को नहीं जानता।।२५।।

तात्पर्य

यह तर्क उठाया जा सकता है कि यदि श्रीकृष्ण पृथ्वी पर वास्तव में विद्यमान थे और सभी के दृष्टिगोचर थे, तो अब वे सबके आगे प्रकट क्यों नहीं हैं? परन्तु वास्तव में तो पृथ्वी पर श्रीकृष्ण के अवतरण काल में भी कुछ दुर्लभ व्यक्ति ही यह जान पाये कि वे भगवान् हैं। कौरव-सभा में, जब शिशुपाल ने सभा के अध्यक्ष के रूप में श्रीकृष्ण के निर्वाचन का विरोध किया, तो भीष्म ने श्रीकृष्ण का समर्थन कर उन्हें परमेश्वर घोषित किया। इसी प्रकार पाण्डव आदि केवल कुछ इने-गिने व्यक्ति ही उनकी परात्परता को जानते थे, सब नहीं। अभक्तों एवं जन-साधारण के प्रति वे प्रकट नहीं थे। इसी से गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि उनके शुद्ध भक्तों के अतिरिक्त अन्य सब मनुष्य उन्हें अपने समान समझते हैं। रसराज के रूप में वे अपने भक्तों के प्रति ही प्रकट थे, अल्पज्ञ अभक्तों के लिए अपनी नित्य अन्तरंगाशक्ति में छिपे रहते थे।

श्रीमद्भागवत (१.८.१८) में कुन्तीदेवी की स्तुति में उल्लेख है कि भगवान् योगमाया रूपी यवनिका से छिपे हुए हैं, अतः साधारणजन उन्हें जान नहीं सकता। कुन्तीदेवी स्तुति करती हैं: 'प्रभो! आप सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के पालक हैं और आपकी भक्ति करना परम धर्म है। इसलिए मेरी विनती है कि आप मेरे योगक्षेम का भी वहन करें। आपका दिव्य विग्रह योगमाया से छिपा हुआ है। ब्रह्मज्योति ही आपकी अन्तरंगा शक्ति का वह आवरण है। अपने दर्शन में बाधा डालने वाले इस देदीप्यमान प्रकाश को हटाकर अपने सच्चिदानन्दमय श्रीविग्रह का मुझे दर्शन दीजिए।'

इस योगमाया रूपी यवनिका का वर्णन गीता के पन्द्रहवें अध्याय में भी है। श्रीभगवान् का दिव्य सच्चिदानन्दमय श्रीविग्रह ब्रह्मज्योति नामक नित्य शक्ति में छिपा हुआ है। इस कारण अल्पज्ञ निर्विशेषवादी भगवान का दर्शन नहीं कर सकते। श्रीमद्भागवत (१०.१४.७) में ब्रह्मस्तुति में निवेदन है: 'हे भगवन्! हे परमात्मन्! हे सकल रहस्यों के स्वामिन्! इस संसार में आपकी शक्तियों और लीलाओं की गणना करने की किस में सामर्थ्य है? अपनी उस अन्तरंगा शक्ति का आप नित्य विस्तार करते रहते हैं, अतः किसी के लिए भी आपको जानना सम्भव